Golden Research Thoughts
Vol -2 , ISSUE –10, April.2013
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

रामकथा में हिंदी साहित्य का योगदान

भोपळे व्ही. आर.
एम.ए., एम.एड्., एम.फिल., नेट.
श्री. सरस्वती महाविद्यालय, अंबाजोगाई,जि. बीड मराठवाडा, महाराष्ट्र

सारांश :-

भक्तिकाल के सभी पंथ-उपपंथ ईश्वर के उपासक थे। ईश्वर संबंधी हर एक की कल्पना अलग-अलग थी इतना ही। पर इन सबकी साधना और साहित्य की अभिव्यक्ति में लोक जीवन ही मूल प्रेरणा थी। सगुण भक्ति धारा के अंतर्ग दो प्रकार के काव्य का निर्माण हुआ- राम काव्य एवं कृष्ण काव्य। वे कवि जिन्होंने 'राम' को अपना आराध्य मानकर काव्य रचना की, प्रथम वर्ग के कवि हैं। राम को विष्णु का अवतार एवं अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र के रुप में जाना जाता है, अतः राम भक्ति के रुप में वैष्णव भक्ति का पुनराख्यान ही माध्यकालीन रामकाव्य में किया गया है। वैष्णव भक्ति का प्रचार प्रसार करने का श्रेय रामानुजाचार्य, रामानंद, निंबाकाचार्य, मध्वाचार्य एवं श्री विष्णु स्वामी जैसे आचार्यों को जाता है। वैष्णव भक्ति के माध्यम से राम और कृष्ण की विष्णु के अवतारों के रुप में अपासना का सर्वत्र प्रचार हुआ और कवियों ने भी इनके जीवन चरित्र को आधार बनाकर रचनाए प्रस्तुत कीं।

प्रस्तावनाः-

राम काव्य के आधार ग्रंथ के रुप में संस्कृत की वाल्मीकि रामायण को माना जा सकता है। बाद में महाभारत के रामोाख्यान में भी यही राम कथा वर्णित की गई। संस्कृत के कुछ अन्य ग्रंथों में भी 'राम' विषयक आख्यान उपलब्ध होते हैं, यथा- अगस्त्य संहिता, राघवीय संहिता, रामरहस्यापनिषद् अध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, अद्भुत रामायण, भुंिण्ड रामायण, विष्णु पुराण, वायु पुराण और भागवत पुराण। राम को पूर्ण ब्रम्ह मानते हुए अनेक पुराणों में रामकथा के अनेक प्रसंग दिखाई पड़ते है। हिंदी रामकाव्य का मूल आधार वाल्मीकि रामायण एवं आध्यात्म रामायण जैसे कुछ ग्रंथ ही हैं।

हिंदी रामकाव्य से पुर्व संस्कृत, प्राकृत, पालि एवं अपभ्रंश साहित्य में राम काव्य की रचना हुई है। दक्षिण के आपवार भक्तों ने भी राम भक्ति के विकास में महत्तवपूर्ण योगदान किया है। बारह आलवार भक्तों में से चार- कुल शेखर, परकाल, विष्णुचित्त एवं शठकोप रामोपासक थे। संस्कृत में वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त राम कथा पर आधृत अन्य ग्रंथ हैं- कालिदास कृत रघुवंश, कुमार पाल क,त जानकीहरण, भवभूतिकृत उत्तर रामचरित, जयदेव कृत प्रसन्न राघव, क्षेमेंद्र कृत रामायण मंजरी आदि। जैन कवि स्वयंभू रचित प्राकृत भाषा में पउमचरिउ राम कथा का प्रसिध्द ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त पुष्पदंत कृत महापुराण में राम कथा का उल्लेख है।

राम का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली रहा हैं कि भारत की अधिकांश भाषाओं में रामकथा काव्यों की रचना होती रही है। हिंदी से इतन अन्य आधुहनक भारतीय भाषाओं में रामकथा पर लिखे गए प्रमुख काव्य ग्रंथ हैं- कृतिवासी रामायण (बंगला), कंब रामायण (तमिल), रंग रामायण (तेलुगू), भावार्थ रामायण (मराठी), मंगल रामायण (मराठी) आदि। गुजराती असमी आदि भाषाओं के भी अनेक कवियों ने राम कथा काव्यों की रचना की है।

हिंदी में सर्वप्रथम चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासों के मंगलाचरण में विष्णु के दशावतारों के अंतर्गत ४८ पद्यों में राम कथा का संक्षेप में वर्णन हुआ है। हिंदी साहित्य में राम काव्य का पूर्ण विकास भक्तिकाल में ही हुआ। रामानंद को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने राम काव्य परंपरा का प्रथम कवि स्वीकार किया है। वे विनय और स्तुति के पद बनाकर गाया करते थे। 'आरति कीजै हनुमान लला की' यह पद रामानंद जी ने हनुमान जी की स्तुति में लिखा है। उनकी एक अन्य रचना 'रामाष्टक' है। कुछ अन्य विद्वान राम रक्षा स्तोत्र को भी उनकी रचना मानते हैं किंतु आचार्य शुक्ल ने इसे उनकी रचना नहीं माना है। राम भक्ति काव्य परंपरा के दूसरे सशक्त कवि हैं- विष्णु दास, जिन्होंने 'रामायण कथा' नामक ग्रंथ वाल्मीकि रामायण के आधार पर लिखा है। तुलसी से पूर्व रामभ्ळाक्त कवियों में ईश्वरदास का नाम भी लिया जा सकता है। इन्होंने 'भरत मिलाप' और 'अंगद पैज' नामक दो राम कथा काव्यों की रचना की।

राम काव्य परंपरा के सर्वप्रमुख एवं सशक्त कवि हैं- गोस्वामी तुलसीदास, लिन्होंने रामकथा पर अनेक ग्रंथें की रचना की। इनमें सर्वप्रमुख है- रामचरितमानस, जो हिंदी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, कृष्ण गीतावली, रामलला नहछू, रामाज्ञा प्रश्न ऐसे कुल बारह ग्रंथों की रचना की है।

रामभक्त कवियों में अग्रदास का नाम भी उल्लेखनीय है। इन्होंने राम भक्ति परंपरा में रसिक भावना का समावेश करते हुए 'अग्रअली' नामक काव्य ग्रंथ की रचना की। ये स्वयं को जानकी जी की सखी मानकर काव्य रचना करते थे। नाभादास कृत अष्टयाम भी अग्रअली से प्रभावित रसिक भावना से युक्त रामकाव्य है। भक्तिकाल के अन्य रामभक्त कवियों में प्राचंद चौहान, माधवदास, ऱ्हदयराम, लालदास, नरहरि बापट के नाम लिए जा सकते है। प्राचंद चौहान ने 'रामायण महानाटक' की रचना की जो वस्तुत: नाटक न होकर संवादात्मक प्रबंध काव्य ही है। माधवदास ने राम रासों और अध्यात्म रामायण नामक काव्य ग्रंथों का प्रणयन किया जबकि ऱ्हदयराम ने 'हनुमन्नाटक' नामक काव्य ग्रंथ की रचना की। परहरि वारहट ने 'पौरुषेय रामायण' की रचना वाल्मीकि रामायण के आधार पर की। लालदास ने 'अवधविलास' नामक ग्रंथ लिखा जिसमें राम जन्म से उनके वनगमन तक की कथा है।

नंददास भी प्रारंभ में रामभक्त ही थे। पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने उपरांत भी राम एवं हनुमान के प्रति उनके मन में श्रध्दा विद्यमान थी। इनके तीन चार पद ही रामकथा से संबंधित हमलते हैं। निंबार्क संप्रदाय के अंतर्गर रसिक शाखा के प्रवर्तक परशुराम देव राम के सगुण एवं निर्गुण दोनों रुपों के प्रति अनुरक्त थे। उन्होंने 'रघुनाथ चरति' एवं 'दशावतार चरित' में राम की कथा का वर्णन किया है। राधाबल्लभ संप्रदाय के संस्थापक हित हरिवंश के कुछ पर राम कथा पर है। सखी संप्रदाय के संस्थापक हरिराम व्यास के पिता माधवदास जगन्नाथी ने 'रघुनाथ लीला' नामक रचना में राम के चरित्र का वर्णन किया है।

रीतिकाल एवं आधुनिक काल में भी राम काव्य परंपरा का पर्याप्त विकास हुआ। केशवदास ने रामचंद्रिका जैसा सशक्त ग्रंथ लिखकर इस परंपरा को आगे बढ़ाया। इसी प्रकार आधुनिक काल मे कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' जैसी प्रौढ़ रचना के द्वारा इस परंपरा को विकसित किया।

तुलसीदास, रामानंद तथा ओर अनेक विद्वानों ने राम को अपना देवता बनाकर रचना की है। रामकथा या रामकाव्य लिखने में हिंदी साहित्य का काफी योगदान रहा है। इतना की आज उत्तर भारत में रामचरितमानस को हिंदूओं के पूजाघरों में स्थान मिला है। हरएक विद्वान ने राम को अपनी पध्दति से सहेजने का कार्य किया है। किसी के राम लोकरक्षक है तो किसी के राम दयालू है, किसी ने राम को समाज में 'आदर्श' के रुप में प्रस्थापित किया है। रामभक्त कवियों ने रामकथा तो लिखी ही है लेकिन कृष्णभक्त कवियों ने भी रामकथा में अपना योगदान दिया है। सूरदास द्वारा रचित सूरसागर के प्रथम एवं नवम् स्कंधों

में रामकथा से संबंधित पद मिलते है। नवम स्कंध में १५८ पदों में संपूर्ण रामकथा वर्णित है। ये पद सात काण्डों में संयोजित हैं तथा इनमें राम के लोकरक्षक स्वरुप का चित्रण है। इनमें प्रबंधात्मक कथासूत्र भी विद्यमान है। इस रामकथा में कुछ मौलिक उद्‌भावनाएँ भी हैं विशेषत: लक्ष्मण शक्ति के प्रसंग में हनुमान द्वारा आयोध्या में आकर सारा वृत्तांत बताना, अयोध्यावासियों की चिंता, कौशल्या, सुमित्रा के संदेश आदि।

राम भक्ति शाखा के कवियों ने राम के प्रति दास्य भाव की भक्ति भावना प्रदर्शित की है। वे स्वयं को सेवक तथा राम को अपना आराध्य मानते हैं। तुलसी ने रामचरितमानस में दास्य भाव की भक्ति को मुक्ति का साधन मानते हुए कहा है-

सेवक-सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगरि।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उनकी भक्ति के स्वरुप को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "गोस्वामी जी की भक्ति पध्दति की सबसे बड़ी विशेषता है उनकी सर्वांगपूर्णता। सब पक्षों के साथि उसका सामंजस्य है। न उसका कर्म या धर्म से विरोध है, न ज्ञान से। धर्म तो उसका नित्य लक्षण है। तुलसी की भक्ति को धर्म और ज्ञान दोनों की रसानुभूति कह सकते हैं।"

तुलसीदास जी ने अपने सभी काव्य ग्रंथों में राम के प्रति अनन्य भक्ति भाव व्यक्त किया है, इसीलिए उन्हें राम का एकनिष्ठ एवं अनन्य भक्त कहा गया है। वे चातक को प्रेम और भक्ति का परम आदर्श मानते हुए कहते हैं-

एक भरोसे एक बल एक आस विस्वास।

एक राम घनस्याम हित चातक तुलसीदास।।

राम भक्त कवियों की एक उल्लेखनीय विशेषता है- इनकी समन्वयवादी प्रवृत्ति। तुलसी के समय में समाज में अनेक प्रकार के विग्रह व्याप्त थे। धर्म, जाति, संप्रदाय, भाषा के नाम पर आए दिन संघर्ष होते रहते थे, अत: समन्वय तत्कालीन युग की आवश्यकता थी। तुलसी ने रामचरितमानस में हर दृष्टि से समन्वयवादी प्रवृत्ति को अपनाते हुए लोकनायक होने का परिचय दिया। सगुण भक्ति धारा कवि होते हुए भी उन्होंने निर्गुण की उपेक्षा नहीं की अपितु निर्गुण ब्रम्ह को ही सगुण और साकार रुप में अवतार ग्रहण कर मानवीय लीलाएं करते हुए दिखाकर दोनों का समन्वय किया। इसी प्रकार उन्होंने शैव और वैष्णव का समन्वय कर राम के द्वारा शिव की अर्चना करवाई है। यही नहीं अपितु उन्होंने ज्ञान और भक्ति का समन्वय किया, राजा और प्रता का समन्वय किया तथा जन भाषा और संस्कृत का समन्वय किया।

राम भक्त कवियों का उद्देश्य केवल काव्य रचना करना ही नहीं था। वे जितने उच्चकोटि के कवि थे, उतने ही बड़े उपदेशक भी थे। उनकी रचनाएं केवल काव्य रसिकों के आस्वाद की विषयवस्तु नहीं हैं, अपितु जनता के एक बहुत बड़े वर्ग को जीवन के नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी देती हैं। उन्होंने राम के चरित्र के द्वारा आदर्श उपस्थित किया है। यही नहीं रामचरितमानस के अन्य पात्र भी हमारे सामने आदर्श प्रस्तुत करते है।

राम काव्य में स्थान-स्थान पर नारी के विषय में अपना दृष्टिकोण कवियों ने प्रस्तुत किया है। प्राय: आलोचकों ने तुलसी के नारी विषयक दृष्टिकोण के प्रति पूर्वाग्रह रखते हुए उन्हें नारी निंदक के रुप में रुपित किया है। लेकिन तुलसी ने सीता, पार्वती, अनुसूया जैसी नारियों के उज्ज्वल चरित्र की परिकल्पना भी की है।

राम भक्त कवियों ने राम कथा को लेकर प्राय: प्रबंध काव्यों की रचना की है। जैसे तुलसीदास का रामचरितमानस, प्राणचंद चौहान ने रामायण महानाटक, लालचंद ने अवध विलास आदि। इनके रामकथा में ऐसे अनेक मार्मि प्रसंग उपलब्ध हैं, जिनका होना प्रबंध काव्य के लिए अत्यावश्यक है। रामकाव्य की रचना प्रमुखता अवधी भाषा में हुई है।

इसके अतिरिक्त ओर भी रचनाकारों ने रामकथा लेखन में अपना योगदान दिया है। जिनमें है- रामानंद का रामरक्षा स्त्रोत, विष्णुदास का भरतमिलाप और अंगदपैज, मुनि लावण्य का रावण-मंदोदरी संवाद, ब्रम्हजिनदास का रामचरित और हनुमंत रास, अग्रदास का ध्यानमंजरी-अष्टयाम-रामभजन मंजरी-उपासना वावनी-पदावली-हितोपदेश भाषा, केशवदास का रामचंद्रिका, सेनापति का रामायण महानाटक, माधवदास चारण का अध्यात्म रामायण और हनुमन्नाटक, नरहरि बापट का पौरुषेय रामायण, कपूरचंद्र त्रिखा का रामायण, परशुराम देव का रघुनाथ चरित और दशावतार चरित, माधवदास जगन्नाथी का रघुनाथ लीला आदि ग्रंथ द्वारा हिंदी रामकथा में अपना योगदान इन रचनाकारों दिया है।

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि कृष्ण काव्य की तुलना में भक्तिकालीन रामकाव्य भले ही परिमाण की दृष्टि से न्यून हो, किंतु अपनी गरिमा एवं उदात्तता के कारण वह हिंदी काव्य में सर्वश्रेष्ठ है। भक्तिरस से सराबोर इन कवियों की वाणी ने जतना को आशा, उत्साह, एवं स्फुर्ति का संदेश दिया। यही कारण है कि गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस आज राज से लेकर रंक तक, विद्वान से लेकर मूर्ख तक सबके घरों में विराज रहा है। इन कवियों का प्रदेय हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है और इनकी उच्चकोटि की रचनाओं के कारण ही भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना गया है।

संदर्भ संकेत

१. हिंदी साहित्य कोश : भाग २ - सं. धीरेंद्र वर्मा

२. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ - डॉ. जयकिशन प्रसाद

३. मध्यकाल में नवजागरण - डॉ. मु. ब. शहा